Daily Gospel Reflections in Hindi

08 July 2019

योहन 16:25-33

I HAVE CONQUERED THE WORLD

''स्पष्ट शब्दों में पिता के विषय में बताना'' – तार्किक और दार्शनिक रूप में बाइबिल के दोनों विधानों को पढ़ने से हमें समझ में आता है कि ईश्वर प्रगतिशील ढंग से अपने आप को दुनिया और मानवजाति के समक्ष प्रकट करते है। जैसे–जैसे इंसान की सोचने और समझने की क्षमता बड़ी वैसे–वैसे कहानी से तोरा की नियमावली की ओर, फिर नबियों से ईश्वर के पुत्र की ओर हमें इशारा दिया गया। प्रभु येसु अपने सार्वजनिक जीवन के शुरूआत में ईश्वर और ईश्वरीय राज्य के बारे में समझाने हेतु दृष्टांतों का सहारा लिया।

आज के सुसमाचार में प्रभु कहते है कि वह समय आ गया है जब इन सब सहारों को पीछे छोड़ दिया जायें, और शिष्य पिता ईश्वर से सीधा संवाद कर सकें। यहां इशारा पवित्र आत्मा के आगमन के बारे में है। ''जब वह सहायक, पिता के यहां से आने वाला वह सत्य का आत्मा आएगा,..... तो वह मेरे विषय में आने वाला वह सत्य का आत्मा आएगा, ... तो वह मेरे विषय में साक्ष्य देगा (Jn. 15:26)। यही बात हम (Ez. 11:19-20) में पढ़ते है – ''मैं उन्हें एक नये हृदय प्रदान करूंगा और उन में एक नई आत्मा रख दूंगा.... इससे वे मेरी प्रजा होंगे और मैं उनका ईश्वर हाऊँगा। नबी यिरमियाह भी इसका उल्लेख करते है – वह समय बीत जाने के बाद..... मैं अपना नियम उनके अभ्यन्तर में रख दूंगा... इसकी जरूरत नहीं रहेगी कि वे एक दूसरे को भिक्षा दें.... सब के सब मुझे जानेंगे (Jer. 31:33-34) (Heb. 8:10-11) इस बात को संत योहन ने प्रकाशना ग्रंथ में बखूबी लिखा है – ''वे उसे आमने–सामने देखेंगे और उसका नाम उनके माथे पर अंकित होगा'' (Rev. 22:4)। बात समय की पूर्णता की है। समय की पूर्णता में ईश्वर इंसान के रूप में हमारे बीच निवास किया। समय की पूर्णता में पिता के यहां से सहायक भेजा गया। और समय की पूर्णता में हम आदेन वाटिका के आदि माता–पिता जैसे ईश्वर को आमने–सामने देखेंगे। और यही ईश्वर का विधान है। बशर्ते कि हम उनसे जुड़े रहें, उनके बताये मार्ग पर चलते रहें।

Rev. Fr. Rojan Chirayath

©Rights Reserved. Commission for Social Communications, Diocese of Sagar 2019